अहिंसा यात्रा प्रेस विज्ञप्ति

ज्योतिचरण से ज्योतित हो उठा युनिवर्सिटी आॅफ मद्रास

-प्रज्ञा पुरुष महाप्रज्ञजी के 99वें जन्मदिवस पर जैनोलाॅजी विभाग द्वारा भव्य आयोजन

-महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमणजी ने किया प्रेक्षा प्रणेता को किया स्मरण, दी भावांजलि

-वाइस चांसलर सहित विभिन्न शिक्षाविदों ने महातपस्वी की अभिवन्दना में व्यक्त किए भाव

11.07.2018 ट्रिप्लिकेन, चेन्नई (तमिलनाडु): जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमणजी के ज्योतिचरणों का स्पर्श पाकर चेन्नई के शिक्षा जगत् में विशिष्ट स्थान रखने वाला युनिवर्सिटी आॅफ मद्रास ज्योतित हो उठा। लगभग पचास वर्ष पूर्व तेरापंथ के नवमाधिशास्ता, गणाधिपति आचार्यश्री तुलसी भी इस विश्वविद्यालय में पधारे थे। आचार्यश्री के आगमन से मानों इतिहास ने अपनी पुनारावृत्ति कर ली। विश्वविद्यालय के जैनोलाॅजी विभाग द्वारा आयोजित कार्यक्रम में विभिन्न शिक्षाविदों सहित अन्य गणमान्य भी उपस्थित थे। जिन्होंने महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमणजी का भावभीना स्वागत अभिनन्दन किया। आचार्यश्री विश्वविद्यालय परिसर में बने आॅडिटोरियम में पधारे।

आॅडोटोरियम हाॅल में मंचासीन हुए आचार्यश्री तो उसके उपरान्त कार्यक्रम का शुभारम्भ हुआ। सर्वप्रथम नियमों के अनुसार विश्वविद्यालय का गीत हुआ। उसके उपरान्त आचार्यश्री ने अपने श्रीमुख से नमस्कार महामंत्र का उच्चारण किया। उसके उपरान्त जैनोलाॅजी विभाग की डाॅ. प्रियदर्शना जैन ने स्वागत वक्तव्य दिया। श्री गौतम सेठिया ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। उपस्थित विशिष्ट अतिथियों को चेन्नई चतुर्मास प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष श्री धर्मचंद लुंकड़ आदि ने स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया। उसके उपरान्त डाॅ. विशाल लोढ़ा ने आचार्यश्री के प्रति अपनी श्रद्धासिक्त भावाभिव्यक्ति दी। श्रीमती रेशमा ने आचार्यश्री तुलसी तथा आचार्यश्री महाप्रज्ञजी कर्तृत्वों का वर्णन किया। श्री महावीर जैन द्वारा आचार्यश्री का परिचय प्रस्तुत किया।

आचार्यश्री ने मंगल उद्बोधन के दौरान प्रेक्षा प्रणेता आचार्यश्री मंगल चरणों की अपनी श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए कहा कि उन्होंने मानव जाति के अनेक अवदान दिए, किन्तु शिक्षाजगत् को दिया हुआ उनका अवदान अति विशिष्ट है। उनमें विशेष प्रज्ञा थी। उन्हें मैं श्रद्धा के साथ स्मरण कर रहा हूं। आचार्यश्री ने प्रवचन के दूसरे भाग में विश्वविद्यालय के बच्चों को लौकिक शिक्षा के साथ-साथ अध्यात्म की शिक्षा भी प्रदान करने की पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा कि विद्यार्थियों का बौद्धिक, शारीरिक, मानसिक विकास के साथ भावात्मक विकास भी करने का प्रयास करना चाहिए।

किन्हीं कारणों से विलम्ब से पहुंचे विश्वविद्यालय के वाइस चांसलर श्री पी. दूराईसामी ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। श्रीमती नवरतनबाई ने आचार्यश्री ने 51 की तपस्या का प्रत्याख्यान किया। साध्वीप्रमुखाजी ने भी तेरापंथ के दशमाधिशास्ता आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के विषय में लोगों को पावन संबोध प्रदान करने के उपरान्त आचार्यश्री के आगमन के संदर्भ में कहा कि आज से पचास वर्ष पूर्व आचार्यश्री तुलसी का इस आॅडोटोरियम में नागरिक अभिनन्दन हुआ था। आज आचार्यश्री महाश्रमणजी ससंघ पधारे हैं।

कार्यक्रम के अंत में ट्रिप्लिकेन तेरापंथ महिला मंडल की सदस्याओं व विश्वविद्यालय की छात्राओं ने स्वागत गीत का संगान किया तथा श्री अशोक संचेती ने आभार ज्ञापित किया। अंत में राष्ट्रगान के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।